Lokāyata

Journal of Positive Philosophy
Vol. X, No.02, September 2019

The Positive Philosophy

(ISSN: 2249-8389)

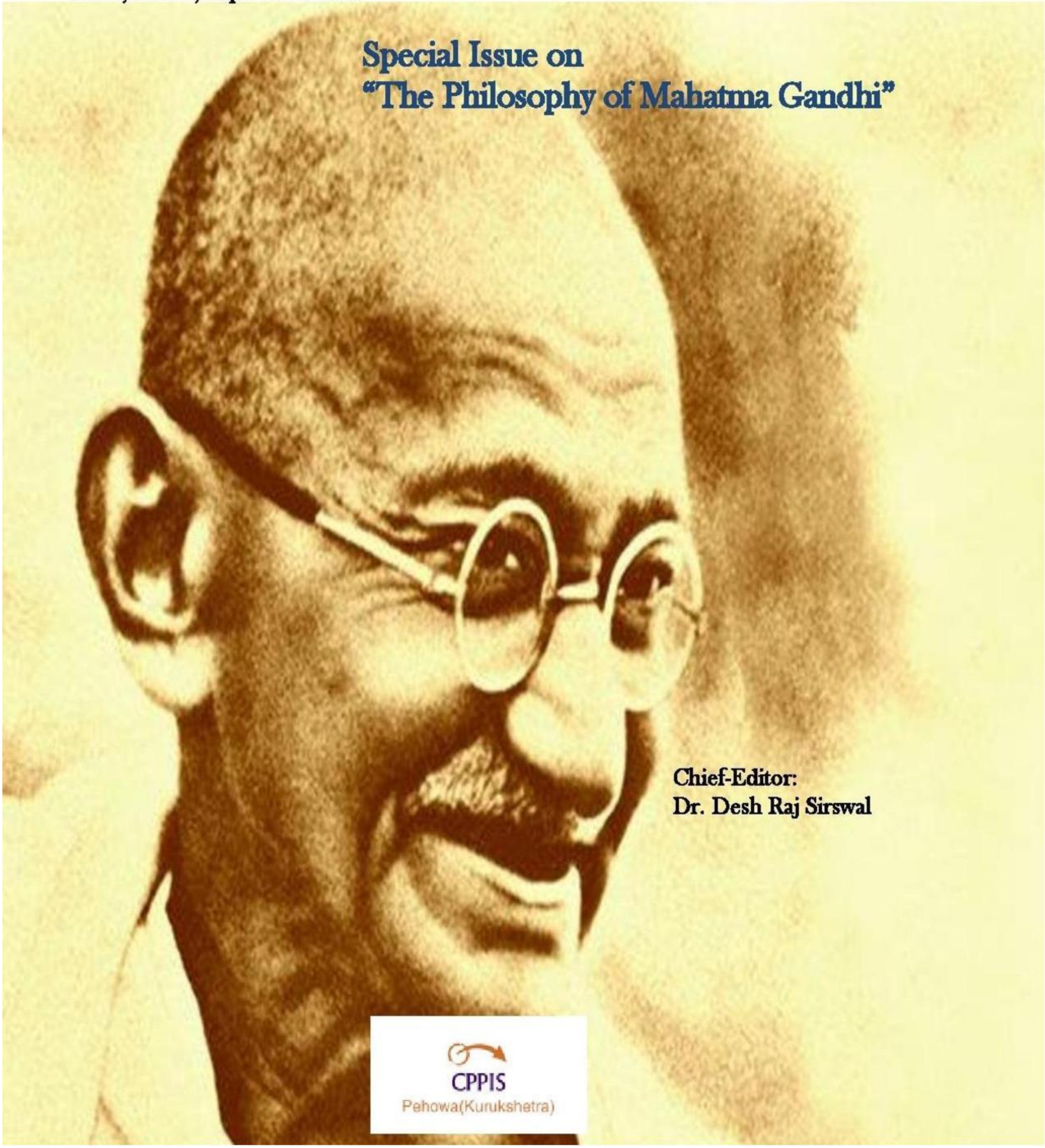

Special Issue on "The Philosophy of Mahatma Gandhi"

Chief-Editor:
Dr. Desh Raj Sirswal

CPPIS
Pehowa(Kurukshetra)

In this issue……………

Sr. No.	Title of the Paper & Author	Page No.
1.	NON-VIOLENCE AND PRAGMATIC SPIRITUALITY – WITH SPECIAL REFERENCE TO GANDHI'S PHILOSOPHY: Dr. Aditi Patra Nee Ray	05
2.	THE PHILOSOPHY OF M. K. GANDHI: Alok Kumar Verma,	11
3.	GANDHIAN PHILOSOPHY: A SYNTHESIS OF MODERNITY AND POSTMODERNITY: Anselam Minj	18
4.	RELEVANCE OF GANDHIAN THOUGHT IN THE AGE OF GLOBALISATION: Dr. Arpita Chakraborty	25
5.	GANDHI'S THOUGHT AND WORLD PEACE : Sri. Bappa Sutradhar	30
6.	MANAGEMENT GURU : THE GANDHIAN MODEL: Dr. Geeta Mehta	39
7.	SPIRITUAL GLIMPSES OF EDUCATIONAL WISDOM IN GANDHIAN NAI TALIM: Dr.Ferosh M.Basheer	45
8.	MAHATMA GANDHI'S CONTRIBUTION TO WOMEN'S EMPOWERMENT IN INDIA: Dr. Jayita Mukhopadhyay,	48
9.	NON-VIOLENCE AND SATYAGRAHA: GANDHIAN APPRAISAL: DR. KRISHNA PASWAN	54
10.	THE PHILOSOPHY OF MAHATMA GANDHI: Liza mayee Pradhan	60
11.	LANGUAGE AND EDUCATION: A CRITICAL APPROACH TO GANDHI AND WITTGENSTEIN: Dr. Mudasir Ahmad Tantray & Tariq Rafeeq Khan	68
12.	WORLD PEACE AND ENVIRONMENT: GANDHIAN PERSPECTIVE: Dr. Pankoj Kanti Sarkar	74
13.	CHRIST'S INFLUENCE ON THE POLITICAL PHILOSOPHY OF GANDHI: Dr. Rajen Lakra	80

14.	THE RELIGIOUS PHILOSOPHY OF MAHATMA GANDHI: Dr. S. Thanigaivelan	85
15.	THE BHAGAVADGĪTĀ’S INFLUENCE ON GANDHI’S NOTION OF AHIMSĀ: SOME REFLECTIONS: Shubhra Jyoti Das	90
16.	THE PHILOSOPHICAL SIGNIFICANCE OF GANDHI: Dr. Vijay Chandar	97
17.	GANDHI’S VISION OF DEVELOPMENT: RELEVANCE FOR 21ST CENTURY: Dr. Gobinda Chandra Sethi	104
18.	AN ANALYSIS OF THE CONCEPTS OF SOCIAL AND POLITICAL THOUGHTS OF GANDHI AND AMBEDKAR : Suyasha Singh	114
19.	राम राज्य : प्राचीन, गांधी और वर्तमान परिप्रेक्ष्य. सीमा सोनी	121
20	गांधी का राष्ट्रवाद . डॉ. तेजराम पाल	126
21.	महात्मा गाँधी के अनुसार आधुनिक सभ्यता: एक अवलोकन : डॉ देशराज सिरसवाल	133
	REPORT OF THE PROGRAMME	138

महात्मा गाँधी के अनुसार आधुनिक सभ्यता: एक अवलोकन

(Mahatma Gandhi on Modern Civilization: An Overview)

डॉ देशराज सिरसवाल
दर्शन-विभाग,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
सेक्टर 46, चंडीगढ़.

सारांश

महात्मा गाँधी भारत के कुछ महान विद्वानों में से एक हैं जिन्होंने विश्वपटल पर अपनी एक अलग छाप छोड़ी है. उनके दर्शन को भारतीय जनमानस ने खुले मन से आत्मसात किया जिसका उदाहरण स्वतन्त्रता आन्दोलन के समय में उनके प्रभाव से जाना जा सकता है. गाँधी के सत्य के प्रयोग, अहिंसा, सत्याग्रह, सर्वोदय आदि विचार आज हमारी भारतीय शिक्षा का एक अभिन्न अंग बन चुका है. राजनीति, धर्म, सामाजिक समस्याओं पर उनका चिन्तन हमें आश्चर्य में डाल देता है. उनका साहित्य लगभग सौ ग्रन्थों में प्रकाशित रूप में हमारे बीच उपलब्ध है. गाँधी के जीवन पर भारतीय दर्शन का व्यापक प्रभाव था. गीता और बुद्ध के 'सर्वभूत हित' के आदर्श से गाँधी प्रभावित रहे. उनके चिन्तन पर रस्किन एवम् टॉलस्टॉय का भी प्रभाव था. इस तरह गाँधी में पूर्व और पश्चिम का समन्वय दिखाई देता है. गाँधी के अनुसार आधुनिक सभ्यता अनीति और अधर्म पर आधारित है इसीलिए सर्वग्रासी है . गाँधी ने वर्तमान सभ्यता की चार प्रमुख समस्यायों को चिंताजनक माना-हथियारों एवम् हिंसा की समस्या, पर्यावरण , निर्धनता एवं मानवाधिकारों की समस्या. यह समस्याएं आधुनिक सभ्यता की देन है अत: उन्होंने इसकी आलोचना की तथा विकल्प में एक नई मानव सभ्यता का प्रारूप प्रस्तुत किया जो सादगी, संयम , अपरिग्रह एवम् स्वावलम्बन की जीवनशैली के साथ अहिंसात्मक एवम् शुद्ध साधनों तथा प्रकृति के साथ मैत्री व साहचर्य पर आधारित विकास पद्धति का पक्षधर हैं. आज गाँधी एक व्यक्ति न रहकर एक वाद की तरह हमारे सामने प्रकट होते है जो हमारे सामाजिक और राजनैतिक जीवन पर असर डाल रहा है. आज गाँधी –वन्दन एवं गाँधी-विरोध का प्रवाह निरंतर चल रहा है लेकिन देश एवम् विश्व की परिस्थितियाँ गाँधी चिन्तन की प्रासंगिकता को व्यापक रूप से उजागर कर रही हैं प्रस्तुत पत्र का उद्देश्य आधुनिक सभ्यता पर उनके विचारों को जानने का प्रयास है तथा आज के समय के अनुरूप समीक्षा करना भी है.

मुख्य-पद: महात्मा गाँधी, भारतीय दर्शन, आधुनिक सभ्यता, भारतीय समाज एवम् मूल्य.

परिचय

महात्मा गाँधी का व्यक्तित्व का प्रभाव विश्व्यापी रहा है. उनको परम्परागत या शाश्त्रीय ढंग से दार्शनिक नहीं कहा जा सकता किन्तु अपने उनके विचारों के कारण आधुनिक भारतीय दर्शन में वह महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं. उन्होंने सत्य और अहिंसा के विभिन्न व्यावहारिक रूपों को सामाजिक समस्याओं के समाधान हेतु प्रदर्शित किया और अपनी सफलता के कारण वह न केवल भारत के अपितु विश्व के नैतिक चिंतकों में अपनी विशेष जगह बना चुके हैं. गाँधी जी पर पूर्व और पश्चिम के ग्रन्थों और विचारकों का प्रभाव था सत्य और अहिंसा के दो सैद्धांतिक अस्त्रों से उन्होंने नैतिक संघर्ष किया और भारत के प्रत्येक सांस्कृतिक , सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक पक्षों में नव जागरण प्रस्तुत किया.

गाँधी जी के लिए कर्तव्य या निष्काम कर्म सच्चा आचरण है. वह राजनीति में भी साम, दाम, दंड और भेद की नीति को अमानवीय मानते थे. सत्य के की प्राप्ति के लिए अहिंसा ही श्रेष्ठ है. अहिंसा का अर्थ मन, वाणी और कर्म से किसी को दुःख

न देना है. गांधीजी के अनुसार अहिंसा आत्मशक्ति है जो सत्याग्रही के लिए सत्य के साक्षत्कार का साधन है. साधनों की पवित्रता के साथ –साथ साध्य की पवित्रता पर भी जोर दिया है. उनके अनुसार मनुष्य के जीवन का उद्देश्य आत्मज्ञान, आत्मसिद्धि या आत्मदर्शन है.

'हिन्द स्वराज' में जब गांधीजी हिन्दुस्तानी और पश्चिमी सभ्यता का प्रमुख भेद बतलाते हैं तो वे यही कहते हैं कि पश्चिम की सभ्यता निरीश्वरवादी है और हिन्दुस्तान की सभ्यता ईश्वर को मानने वाली है. अपनी आत्मकथा में गांधीजी ने लिखा है-'मैं अपने जीवन के इन तीस वर्षों में जिस लक्ष्य को प्राप्त करने की कोशिश कर रहा हूं और जो मेरे जीवन की सबसे बड़ी अभिलाषा रही है, वह आत्म साक्षात्कार है. मैं परमात्मा के साक्षात् दर्शन करना चाहता हूं. मेरे जीवन का उद्देश्य मोक्ष को प्राप्त करना रहा है. मैं इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जीवित हूं और मेरा सारा कार्य इसी ओर अभिमुख है.' गांधीजी की मोक्ष की इच्छा, आत्मदर्शन की अभिलाषा, और हरि दर्शन की इच्छा ने ही उन्हें सत्याग्रह आश्रम को स्थापित करने के लिए प्रेरित किया था. गांधीजी के शब्दों में-'मैंने यह आश्रम आत्मदर्शन के लिए बनाया है. सेवा इसका बहुमूल्य अंग है.'

गांधीजी के अनुसार धार्मिक, सामाजिक एवम् राजनैतिक समानता का तब तक कोई अर्थ नहीं है , जब तक की देश के सभी वर्गो में आर्थिक समानता न लायी जाये. गाँधी जी के अनुसार आर्थिक असमानता का अंत धनिकों को नष्ट करने से नहीं अपितु धनी और निर्धन के बिच अंतर को कम करने से ही हो सकता है और इसी से समाजवाद की स्थापना की जा सकती है. गाँधी जी ने डॉ राधाकृष्णन के अनुसार, "गांधीजी का जीवन लोगो के लिए आदर्श बन गया है. मानवता के लिये यह आशा है और उसके भविष्य के लिए प्रेरणा . उनके जीवन एवम् कार्यों की स्मृति मानवता की एक अमूल्य निधि है ."[1]

<u>आधुनिक सभ्यता पर विचार:</u>

आज का मानव भौतिक विकास की बुलंदियाँ छु रहा है और आधुनिक सभ्यता के विकास में योगदान दे रहा है. लेकिन आधुनिक सभ्यता में हुआ विकास मानव को एक तरफ तो भौतिक सुखों से भरपूर जीवन दे रहा हैं लेकिन उसकी ज्यादा से ज्यादा पाने की लालसा, वर्तमान विकास से उत्त्पन्न सामाजिक, भौतिक और पर्यावरण सम्बन्धी समयस्याओं से लड़ने का कोई सार्थक और पूर्ण समाधान उसे नहीं मिल रहा है. इस कारण वर्तमान विकास अन्तर्विरोध और अवरोधों से घिर गया है. महात्मा गाँधी द्वारा रचित पुस्तक "हिन्द-स्वराज" उनके आधुनिक सभ्यता की आलोचना का मूल दस्तावेज है. "यह एक 'सभ्यतामूलक विमर्श' है , जिसे 'शैतानी सभ्यता का वैकल्पित दस्तावेज' माना जा सकता है.गाँधी का समग्र चिंतन और सोच-विचार संस्कृति और सभ्यतामूलक प्रश्नों से जुड़ा है और 'हिन्द-स्वराज' में उन सभी प्रश्नों का उतर बीज रूप में मौजूद है."[2]

मानव शुरू से ही परिस्थितिजन्य समस्याओं को समझने और उनसे सम्बन्धी समस्याओं को सुलझाने के लिए सामाजिक और नैतिक स्तर पर मूल्यों की प्राप्ति और मूल्य-सृजन करने वाला वाला प्राणी है.[3] व्यक्ति और समाज के लिए गाँधी का जीवन दर्शन नैतिक मूल्यों को सर्वोपरी स्थान देता है. इसका मतलब है की परिस्थितियाँ चाहे कुछ भी हो हमें अपने मूल्यों को नहीं छोड़ना चाहिए और उनका जीवन में प्रयोग करते रहना चाहिए.[4] गाँधीजी ने 'हिन्द-स्वराज' में यह दिखाने का प्रयास किया है कि, "हिंदुस्तान पश्चिमी सभ्यता के कारण ही गुलाम है और हिंदुस्तान की दुर्दशा के लिए अंग्रेजी राज से अधिक अंग्रेजी (पश्चिमी) सभ्यता जिम्मेदार है. इसलिए, यदि हम भारतीय पश्चिमी सभ्यता के मायाजाल से निकलकर हिनुस्तानी सभ्यता के मूल्यों को आत्मसात कर लें, तो हमें आजाद होने में देर नहीं लगेगी."[5]

गाँधी द्वारा रचित 'हिन्द-स्वराज' के विचारों सार निम्नलिखित है[6]:

- "मेरा उद्देश्य तमाम यंत्रों का नाश करने का नहीं है, बल्कि उनकी हद बांधने का है | हम जो कुछ करें उसमें मुख्य विचार इंसान के भले का होना चाहिए | ऐसे यंत्र नहीं होने चाहिए जो काम के अभाव में आदमी के अंगों को जड़ और बेकार बना दें | इसलिए यंत्रों को मुझे परखना होगा ... यंत्र का उद्देश्य है मानव श्रम की बचत | उसका इस्तेमाल करने के पीछे धन का लोभ नहीं होना चाहिए, बल्कि प्रामाणिक रीति से दया का होना चाहिए | लोभ की जगह हम प्रेम को दें, तब फिर सब अच्छा ही अच्छा होगा |
- अगर हिन्दुस्तान अंग्रेज प्रजा की नक़ल करे तो हिन्दुस्थान पागल हो जाए, ऐसा मेरा पक्का ख्याल है | इसमें अंग्रेजों का कोई ख़ास कसूर नहीं है, पर उनकी – बल्कि यूरोप की – आजकल की सभ्यता का कसूर है | वह सभ्यता नुकसानदेह है और उससे प्रजा पागल होती जा रही है |
- पहले लोग खुली हवा में अपने को ठीक लगे उतना काम स्वतन्त्रता से करते थे | अब हजारों आदमी अपने गुजारे के लिए इकट्ठा होकर बड़े कारखानों में या खदानों में काम करते हैं | उनकी हालत जानवर से भी बदतर हो गई है | उन्हें शीशे बगैरह के कारखानों में जान को जोखिम में डालकर काम करना पड़ता है | इसका लाभ पैसे वाले लोगों को मिलता है | पहले लोगों को मार पीट कर गुलाम बनाया जाता था; आज लोगों को पैसे का और भोग का लालच देकर गुलाम बनाया जाता है | पहले जैसे रोग नहीं थे वैसे रोग आज लोगों में पैदा हो गए हैं और उनके साथ डोक्टर खोज करने लगे हैं कि ये रोग मिटाए कैसे जाएँ ? ऐसा करने से अस्पताल बढे हैं | यह सभ्यता की निशानी मानी जाती है |
- उसमें नीति या धर्म की बात ही नहीं है | शरीर का सुख कैसे मिले यही आज की सभ्यता ढूँढती है, और यही देने की वह कोशिश करती है | परन्तु वह सुख भी नहीं मिलता |
- यह सभ्यता तो अधर्म है और वह यूरोप में इतने दरजे तक फ़ैल गई है कि वहां के लोग आधे पागल जैसे देखने में आते हैं | उनमें सच्ची कूबत नहीं है; वे नशा करके अपनी ताकत कायम रखते हैं
- पैगम्बर मोहम्मद साहब की सीख के मुताबिक़ यह शैतानी सभ्यता है | हिन्दू धर्म इसे निरा कलियुग कहता है | इस सभ्यता के कारण अंग्रेज प्रजा में सडन ने घर कर लिया है | यह सभ्यता दूसरों का नाश करने वाली और खुद नाशवान है | इससे दूर रहना चाहिए | अगर आज की सभ्यता बिगाड़ करने वाली है, एक रोग है, तो ऐसी सभ्यता में फंसे हुए अंग्रेज हिन्दुस्तान को कैसे ले सके ? हिन्दुस्तान अंग्रेजों ने लिया सो बात नहीं है, बल्कि हमने उन्हें दिया है ..... सच्चा डोक्टर तो वह है जो रोग की जड़ खोजे | आप अगर हिन्दुस्तान के रोग के डोक्टर होना चाहे हैं तो आपको रोग की जड़ खोजनी ही पड़ेगी |
- आज हिन्दुस्तान की रंक दशा है | मेरी पक्की राय है कि हिन्दुस्तान अंग्रेजों से नहीं, बल्कि आजकल की सभ्यता से कुचला जा रहा है, उसकी चपेट में वह फंस गया है | मुझे तो धर्म प्यारा है, इसलिए पहला दुःख मुझे यह है कि हिन्दुस्तान धर्मभ्रष्ट होता जा रहा है | धर्म का अर्थ मैं यहाँ हिन्दू, मुस्लिम या जरथुस्थ धर्म नहीं करता | लेकिन इन सब धर्मों के अन्दर जो धर्म है, वह हिन्दुस्तान से जा रहा है | हम ईश्वर से विमुख होते जा रहे हैं |
- डॉक्टर हमें धर्म भ्रष्ट करते हैं | उनकी बहुत सी दवाओं में चरबी या दारू होती है | इन दोनों में से एक भी चीज हिन्दू मुसलमान को चल सके, ऐसी नहीं है | उस धंधे में परोपकार नहीं है | डॉक्टर सिर्फ आडम्बर दिखाकर ही लोगों से बड़ी फीस बसूल करते हैं और अपनी एक पैसे की दवा के कई रुपये लेते हैं | जब ऐसा ही है तब भलाई का दिखावा करने वाले डॉक्टरों से नीम हकीम ज्यादा अच्छे |

- मैं मानता हूँ कि जो सभ्यता हिन्दुस्तान ने दिखाई है, जो बीज हमारे पुरखों ने रोप हैं, उसकी बराबरी कर सके ऐसी कोई चीज देखने में नहीं आई | रोम मिट्टी में मिल गया, ग्रीस का सिर्फ नाम ही रह गया, मिस्र की बादशाही चली गई, जापान पश्चिमी शिकंजे में फंस गया, लेकिन गिरा टूटा जैसा भी हो, हिन्दुस्तान आज भी अपनी बुनियाद में मजबूत है |
- मनुष्य की वृत्तियाँ चंचल हैं, उसका मन बेकार की दौड़ धुप किया करता है | उसका शरीर जैसे जैसे ज्यादा दिया जाए बैसे बैसे ज्यादा मांगता है | भोग भोगने से भोग की इच्छा बढ़ती जाती है | इसलिए हमारे पुरखों ने भोग की हद बाँध दी | बहुत सोचकर उन्होंने देखा कि सुख दुःख तो मन के कारण हैं | अमीर अपनी अमीरी के कारण सुखी नहीं है, गरीब अपनी गरीबी के कारण दुखी नहीं है | अमीर दुखी देखने में आता है और गरीब सुखी देखने में आता है | करोड़ों लोग तो गरीब ही रहेंगे, ऐसा देखकर उन्होंने भोग की वासना छुडवाई |
- हजारों साल पहले जो हल काम में लिया जाता था, उससे हमने काम चलाया | हजारों साल पहले जैसे झोंपड़े थे, उन्हें हमने कायम रखा | हजारों साल पहले जैसी हमारी शिक्षा थी वही चलती आई | हमने नाशकारक होड़ को समाज में जगह नहीं दी | उन्होंने सोचा कि बड़े शहर खड़े करना बेकार की झंझट है | उनमें लोग सुखी नहीं होंगे | उनमें धूर्तों की टोलियाँ और वेश्याओं की गलियाँ पैदा होंगी; गरीब अमीरों द्वारा लुटे जायेंगे | इसलिए उन्होंने छोटे देहातों में संतोष माना | उन्होंने देखा कि राजाओं और उनकी तलवार की बनिस्बत नीति का बल ज्यादा बलवान है | इसलिए उन्होंने राजाओं को नीतिवान पुरुषों, ऋषियों और फकीरों से कम दर्जे का माना | जिस राष्ट्र का ऐसा गठन है, उसको कोई क्या सिखाएगा ? वह तो स्वयं दूसरों को सिखाने लायक है |
- किसी भी देश में किसी भी सभ्यता को मानने वाले सभी लोग सम्पूर्णता तक नहीं पहुँच पाए हैं | हिन्दुस्तान की सभ्यता का झुकाव नीति को मजबूत करने की ओर है; पश्चिम की सभ्यता का झुकाव अनीति को मजबूत करने की ओर है | इसलिए मैंने उसे हानिकारक कहा है | पश्चिम की सभ्यता निरीश्वरवादी है, हिन्दुस्तान की सभ्यता ईश्वर को मानने वाली है | यों समझकर, ऐसी श्रद्धा रखकर, हिन्दुस्तान कि हितचिंतकों को चाहिए कि वे हिन्दुस्तान की सभ्यता से, बच्चा जैसे माँ से चिपटा रहता है, बैसे चिपटे रहें |
- अंग्रेजों को देश से निकालने का मकसद सामने रखने की जरूरत नहीं है | अगर अंग्रेज हिन्दुस्तानी बनकर रहें तो हम उनका समावेश यहाँ कर सकते हैं | अंग्रेज अगर अपनी सभ्यता के साथ रहना चाहें तो उनके लिए हिन्दुस्तान में जगह नहीं है | हम अपना घर साफ़ करें | फिर रहने लायक लोग ही उसमें रहेंगे, दूसरे अपने आप चले जायेंगे |"

उपरोक्त शब्दों से हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं की गाँधी जी के अनुसार सभ्यता वह आचरण है जिसके द्वारा व्यक्ति अपना कर्तव्य पूरा करता है. कर्तव्य पूरा करना अर्थात निति का पालन करना. नीति का पालन अर्थात अपने मन एवम् इन्द्रियों को वश में रखना. इस प्रकार आचरण करते हुए, हम अपने को पहचानते हैं. यही सभ्यता है और जो इसके विरुद्ध है वही असभ्यता है.गाँधी किए अनुसार पश्चिमी आधुनिक सभ्यता 'बिगाड करने वाली' और 'अधर्म का पर्याय है. गाँधी के अनुसार आधुनिक सभ्यता का मुख्य लक्षण है आत्मा से अधिक शरीर की चिंता और शरीर की प्रतिष्ठा के लिए सर्वस्व का समर्पण. उनकी मान्यता थी की आधुनिक सभ्यता का आधार जघन्यतम हिंसा है, जो मनुष्य के समस्त दिव्यगुणों के विपरीत है. यह सभ्यता आत्मविनाश के पथ पर आँख मूंद कर दौड़ रही है. इससे भारत और विश्व को बचाना अति आवश्यक है.[7]

गाँधी आधुनिक सभ्यता के केवल बाहरी स्वरूप के ही नहीं उसकी मनोवृति के भी विरोधी थे. उनकी दृष्टी में अतिशय यंत्रवाद एवम् भोगासक्ति आधुनिक सभ्यता के प्रतिमान है जो आत्मघाती हैं. आधुनिक सभ्यता भोगवादी जीवन को प्रगति का प्रतीक मानती है.[8] गाँधी ने आधुनिक सभ्यता के केंद्र के रूप में अति यन्त्वाद का विरोध किया है. उनकी प्रमुख चिंता यही थी कि मशीनों के साम्राज्य के साथ लोभ एवम् लालच के धंधों के बीच मनुष्य का बचे रहना कठिन है.[9] आधुनिक सभ्यता ने प्रतिद्वन्दता, युद्ध एवम् हिंसा की संस्कृति को विकसित किया है. यह प्रतिद्वन्दता एवम् हिंसा मानव के मध्य ही नहीं बल्कि मानव एवम् प्रकृति तथा राष्ट्र एवम् राष्ट्र ले बीच भी बढ़ रही है. गाँधी के अनुसार सभ्यता का आधार प्रेम एवम् सहयोग है.[10]

<u>समीक्षा</u>

आधुनिक औद्योगिक सभ्यता ने आर्थिक विकास के नाम पर कई देशों के मूल निवासियों को बेरहमी से कुचला और उनकी सभ्यता-संस्कृति , व्यवस्था एवम् आस्था के साथ भी खिलवाड़ किया है. अमरीका या अफ्रीका के मूल निवासी हों या भारत के आदिवासी सभी को एक साजिश के तहत हाशिए पर ढकेला गया है. उनके जल, जंगल, जमीन , पहाड़ और खनिजों को लूटा गया है.11 गाँधी दर्शन न केवल आधुनिक सभ्यता की आलोचना ही नहीं करता बल्कि उससे बचने का विकल्प भी देता है. आचार्य कृपलानी के अनुसार, “गाँधी के दर्शन की आलोचना करते हुए उनको रुढिवादी (conservative),पुनरुत्थानवादी (revivalist), प्रतिक्रियावादी/ सुधार-विरोधी (reactionary), काल्पनिक/आदर्शवादी (utopian) कहा जाता है. यह सत्य है है की ‘हिन्द-स्वराज’ एक अपूर्ण (rough) और आदर्श समाज (ideal society) की रुपरेखा प्रकट करती है लेकिन अंत तक गाँधी के यही विचार नहीं रहे. गाँधी जी ने इसे भी यूटोपिया ही बताया है.”12

सही मायनों में कहा जाए तो महात्मा गाँधी एक क्रन्तिकारी (revolutionary) थे. एक क्रन्तिकारी वह होता है जो मूल्यों के मुल्यांकन के साथ साथ, समाज में नये मूल्यों की स्थापना के लिए प्रभावी एवम् संतोषजनक काम करते हैं. आधुनिक सभ्यता की सारी व्याधियों का समाधान गाँधी-दर्शन में निहित है. गाँधी चिन्तन न तो वामपंथी है न ही दक्षिणपंथी. वह न तो निषेधवादी वैराग्य है और न प्रगतिशील भोगासक्ति. वह इन दोनों से भिन्न सहज जीवन का उपदेश देता है. सहज अर्थात जो स्वाभाविक, प्राकृतिक एवम् अकृत्रिम है.

<u>सन्दर्भ</u>:

1. डॉ. ओमप्रकाश टाक, आधुनिक भारतीय चिंतन, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2008, पृष्ठ 107.
2. सुधांशु शेखर, गाँधी-विमर्श, दर्शना पब्लिकेशन, भागलपुर (बिहार), 2015, पृष्ठ 33.
3. भुवन चंदेल (सं.), नेचर ऑफ़ वायलेंस, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाब यूनिवर्सिटी, चंडीगढ़, 1980, पृष्ठ V.
4. आचार्य जे.बी. कृपलानी, गांधियन थॉट, पंजाब यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन ब्यूरो, चंडीगढ़, 1964, पृष्ठ 14.
5. सुधांशु शेखर, गाँधी-विमर्श, पृष्ठ 33.
6. गाँधीजी के हिन्द-स्वराज के विचारों को “हिन्द स्वराज - महात्मा गांधी (सारांश) | विचार मंथन, hariharsvp.blogspot.com › पुस्तक सार, 24 मई 2014” से पूर्णत: उद्दृत किया गया है.
7. डॉ. ओमप्रकाश टाक, आधुनिक भारतीय चिंतन, पृष्ठ 119
8. वही, पृष्ठ 119.
9. वही, पृष्ठ 120.
10. वही, पृष्ठ 121.
11. सुधांशु शेखर, गाँधी-विमर्श, पृष्ठ 37.
12. आचार्य जे.बी. कृपलानी, गांधियन थॉट, पृष्ठ 42